शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2013

डॉ अम्बेडकर के विचारों और सिद्धान्तों का दलित समाज पर प्रभाव

शोधार्थी : नानकचंद, डॉ के पी सिंह
इतिहास एवं सभ्यता विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नौएडा
गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश

शोध संक्षेप

भारतीय समाज में जाति प्रथा की बेड़ियों को ढीला करने में डॉ भीमराव आंबेडकर का योगदान अतुलनीय है। युगों की दासता को झेल रही अधिसंख्य आबादी को उनका हिस्सा दिलाने के लिए डॉ आंबेडकर ने जो संघर्ष किया, वह अपने आप में बेजोड़ है। छुआछूत के नाम पर एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से घृणा करने को परम्परा का नाम दिया गया और जिसकी आड़ में सैकड़ों वर्षों तक शोषण होता रहा। ऊँची और निम्न जातियों में विभाजित समाज का गुलाम हो जाना कोइ आश्चर्यजनक घंटा नहीं है. प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ आंबेडकर के विचारों के प्रकाश में वर्तमान की समस्याओं पर चिंतन किया गया है।

प्रस्तावना

समकालीन दलित चेतना में डॉ अम्बेडकर के विचारों और सिद्धान्तों का आलोचनात्मक मूल्यांकन उन्हें आश्चर्यचकित कर सकता है, जो दलित इतिहास से अनभिज्ञ है, क्योंकि कोई भी दूसरे वर्ग और समुदाय इतने शोषित और उत्पीडित नजर नहीं आते जितने की दलित। लेकिन अगर व्यक्ति दलित इतिहास से परिचित है, जो गाथा हैं उनकी हजारों वर्षो के उत्पीड़न की, उसे यह विषय केवल रोचक ही नहीं दलितों के लिए बड़ा प्रासंगिक भी लगेगा। दलित चेतना के मुख्य स्त्रोत महान कानूनविद् डॉ भीमराव अम्बेडकर ही हैं। असमानता प्रत्येक युग और हर समाज में किसी न किसी रुप में विद्यमान रही है । इतिहास साक्षात् प्रमाण है कि अस्पृश्यता हिंदू समाज को हजारों वर्षो से अपनी काल कोठरी में कैद किये हुए हैं। भारतीय समाज में जाति व्यवस्था एक विकराल समस्या रहीं है, क्योंकि हिन्दू समाज में जाति का स्थान सर्वप्रथम हैं। जिस तरह वर्ण व्यवस्था के अनुसार शताब्दियों से समाज में ब्राह्मण का स्थान सर्वोपरि माना गया हैं और इसका प्रतिबिम्ब लोकतान्त्रिक और वैश्वीकरण के युग में भी विद्यमान हैं। वर्ण व्यवस्था के अनुसार दलितों की स्थिति समाज में सबसे निचले पायदान पर थी। इस शोध पत्र के द्वारा यह प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है कि क्या समकालीन दलित समाज के लोग डॉ आंबेडकर के विचारों और सिद्धांतों को अपने मार्गदर्शन के लिए आत्मसात कर रहे हैं या नहीं?

शोध विधि

शोधर्थी द्वारा इस शोध पत्र में सन् 1956 के पश्चात्, भारतीय दलित समाज में जाग्रत दलित चेतना और दलित समाज में आये बदलावों अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा और शोध पत्र में निम्न प्रश्नों का उल्लेख किया जा रहा है :

उद्देश्य

आधुनिक काल में दलित समाज की स्थिति

डॉ अम्बेडकर के विचारों और सिद्धांतों का दलित समाज पर प्रभाव

उपलब्ध प्राथमिक स्रोतों और द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से प्रस्तुत शोध में वर्णित प्रश्नों के उत्तर तलाश कर शोध प्रबन्ध में देने का प्रयास किया जायेगा।

द्वितीयक स्रोत

पुस्तकें, अनूदित पुस्तकें] विश्वकोष, समीक्षात्मक पुस्तकें] समीक्षात्मक लेख, पत्रिकाएं, इंटरनेट

डॉ अम्बेडकर दलितों के सबसे बड़े उद्धारक थे, क्योंकि उन्होने दलित समाज को गुलामी और दासता की जंजीरों से मुक्त कराकर स्वाधीनता दिलाई थी। डॉ अम्बेडकर पर जान डीवी, गौतम बुद्ध, कबीरदास के विचारों का गहन प्रभाव पडा। किसी समय के गर्वनर लार्ड कैले ने कहा था कि वे अथक बुद्धि और ज्ञान के स्त्रोत थे। जिस समय डॉ अम्बेडकर दलितों के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय संसदीय प्रजातंत्रा के विरुद्ध इटली में विद्रोह, जर्मनी में विद्रोह, रूस में विद्रोह और स्पेन में विद्रोह चल रहे थे। डॉ. अम्बेडकर पहले दलित समाज सुधरक थे जिन्होने वर्ण व्यवस्था, मनुस्मृति, जातिवाद, ब्राहाणवाद, रुढ़ीवादी कुरीतियों और सामाजिक परम्पराओं का प्रबल विरोध् किया। इसके साथ-साथ उन्होंने दलितों का स्कूलों में प्रवेश करने का अधिकार, मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार, सार्वजनिक संसाधनों के उपयोग करने का अधिकार, समाज में अपनी बात रखने का अधिकार, नौकरियों में आरक्षित सीटों का अधिकार आदि मौलिक अधिकार को दिलाने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ अम्बेडकर दलितों के नहीं पिछड़ों, मजदूरों और स्त्रियों के लिए उम्मीद की किरण बनें और उन्होंनें कहा था कि पश्चिम का लोकतंत्र, समानता और स्वाधीनता का सिद्धांत ही हमारे अछूतों का उद्धार कर सकता हैं।

हरबर्ट माक्र्यूस के शब्दों में कहें तो दलित चेतना एक सांस्कृतिक चेतना है। और इसीलिए विद्रोही भी है। यदि भारत के परिप्रेक्ष्य में विचार करें तो डॉ अम्बेडकर ने दलितों के सामाजिक और राजनैतिक ढाँचे में सुधार लाने हेतु जो सिद्धांत और तरीके अपनाये, उनसे भारत में दलित चेतना का निर्माण हुआ। डॉ अलेक्जेन्डर जेनर ने चेचक और जीवाणुओं को जड़ से समाप्त करने के लिए वैक्सीन का इस्तेमाल किया उसी तरह डॉ अम्बेडकर ने भारतीय समाज में अभिशप्त जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता की बीमारी को समाप्त करने के लिए वैक्सीन के रूप में शिक्षा को अपनाया। भारतीय समाज में जितनी पुरानी जाति व्यवस्था हैं, उससे भी पुरानी हैं दलित चेतना। दलितों की सामाजिक और आर्थिक समस्या पर एक ओर सरकारी कार्यक्रम हैं तो दूसरी ओर दलितों के तमाम बौद्धिक और सामाजिक आंदोलन। हर कोई यह मानता हैं कि दलित समस्या एक अंतरर्राष्ट्रीय मुद्दा है। वर्तमान में दलित चेतना और दलित सशक्तिकरण पर गंभीरतापूर्वक चर्चाएँ और संगोष्ठियाँ होती हैं। यही कारण हैं कि वैश्वीकरण और निजीकरण के युग में दलित अपने शोषण और उत्पीडन की समस्याओं को विश्व पटल पर रखने में कामयाब दिखाई पड़ रहे हैं। दलित चेतना एक गंभीर मुद्दा है, ताकि हम समझ सकें कि भारत में दलितों के उत्पीडन का आधर क्या हैं? इस इंटरनेट के युग में क्यों दलितों के साथ बथानी टोला हत्याकांड, खैरलांजी हत्याकांड, आगरा हत्याकांड, भगाना हत्याकांड, बेल्छीपुर हत्याकांड, सलैयया हत्याकांड, भवरी देवी हत्याकांड, मिर्चपुर हत्याकांड, कुम्हेर हत्याकांड, पिपरा हत्याकांड और नारायणपुर

हत्याकांड जैसी घटनाएं घटित होती हैं ? अम्बेडकर के नाम पर तमाम राजनैतिक दल और सामाजिक आन्दोलन दलितों के वोट बैंक का दुरूपयोग करके दलित समुदाय को भ्रमित कर रहे हैं? दलित हत्याकांडों और दलितों के साथ रोजमर्रा की घटनाओं को दलित और गैर दलित राजनीतिज्ञ संसद में रखने में और सामाजिक आन्दोलन दलित शोषण और दमन की घटनाओं को जनमानस पटल पर रखने में असपफल दिखाई पडते है क्योंकि या तों ये खरीद लिये जाते हैं या तोड़ दिये जाते हैं।

प्रत्येक युग इतिहास का, उसकी परम्पराओं का और प्रयोगों का पुनर्मूल्यांकन करता है। भारत के सामाजिक इतिहास में वर्ण व्यवस्था का महत्तवपूर्ण स्थान है, जो वैदिक काल से लेकर आज भी अपनी पैंठ बनाये हुए हैं। वर्ण व्यवस्था की अवधरणा जिस तरह समाज में पैदा हुई थी, वर्तमान में उसका भौतिक रूप बदल चुका हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राजनैतिक आजादी के साथ सामाजिक रूप से समानता पर आधरित आधुनिक समाज का निर्माण करने का दृढ संकल्प लिया गया था, क्योंकि उसका उददे्श्य था कि जाति, धर्म, लिंग और भाषा के आधर पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जायेगा। समाज में पिछड़ेपन और अस्पृश्यता की समस्या को समाप्त करने का वादा भी किया गया था, लेकिन भारत में जो आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था कायम की गई थी, वह काम ईमानदारी के साथ नहीं किया गया हैं। समाज परिवर्तनशील है। समाज की मान्यताएँ भी परिवर्तनशील होनी चाहिए क्योंकि महात्मा ज्योतिबा फूले का समय बीत गया हैं, बाबा साहेब अम्बेडकर का समय गुजर गया है। रामायण, महाभारत, स्मृतियाँ, धर्मशास्त्र और पौराणिक युग इतिहास में परिवर्तित हो गया है। मनुस्मृति ने सदियों से दलितों का बहुत नुकसान किया यह सिद्धांत बनाकर कि ब्राहाण का नाम मंगलदायक, क्षत्रिय का बलद्योतक, वैश्य का धन युक्त और शूद्रों का निंदायुक्त होना चाहिए, लेकिन आज दलित समाज में अभिशप्त अशिक्षा, रुढिवादिता और सामाजिक विषमताओं की बेड़ियाँ टूटने लगी हैं। दलितों को उनके अधिकार मिलने शुरू हो गये हैं, भँवरीदेवी और फूलनदेवी अब बोलने लगी हैं। सामाजिक आंदोलन दलित समाज के साथ हाने वाली शोषण और उत्पीडन की घटनाओं को जनमानस पटल पर रखने में कामयाब दिखाई पड़ रहे हैं।

डॉ. अम्बेडर ने कहा था कि "हमारा मालिक बनना आपके हित में हो सकता हैं परन्तु आपका गुलाम होना हमारे हित में नहीं है। अब सुर्दशनचक्र आ गया है, द्रौपदी का चीर हरण ,रोकने का, असमानता को मिटाने का, समाज विभाजन रोकने का, समाज को जगाने का, उठाने का और इतना शक्तिशाली बनाने का कि जिससे वह अपने आत्मसम्मान और समानता के संघर्ष को मजबूत बना सके।" यह प्रमाणित है कि जिस तरह यहूदी हजारों वर्षो से जेरूस्लम को नहीं भूल पाया और जेरुसलम उनके विकास और उन्नति का प्रेरणास्रोत रहा है, उसी तरह भारतीय दलित समाज भी अपने हजारों वर्षो के शोषण और कुलचन के इतिहास को भूल नहीं पाया है और इनके विकास और उन्नति के प्रेरणास्रोत गौतम बुद्ध और बौधिसत्व डॉ अम्बेडकर हैं। हिन्दुस्तान के दलित नहीं भारत के दलित अम्बेडकर की विचारधरा और सिद्वान्तों को आत्मसात कर रहे हैं और यहीं कारण है कि दलितों में अपने इतिहास को मजबूत बनाने और स्वसम्मान की लडाई को सफल बनाने के लिए चेतना प्रतिदिन अग्रसर हो रहीं है। मिर्चपुर हत्याकांड, भगाना

हत्याकांड, बेल्छी हत्याकांड, नारायणपुर हत्याकांड, आगरा हत्याकांड, कुम्हेर हत्याकांड, पिपरा हत्याकांड, सलैया हत्याकांड और बथानी टोला हत्याकांड भारतीय लोकतन्त्र के चेहरे पर बदनुमे दाग हैं क्योंकि हम इंटरनेट और मिसाइल युग में प्रवेश कर चुके हैं। एन.सी.आर.बी की रिर्पोट 2011 के अनुसार प्रत्येक दिन 3 दलित महिलाओं के साथ दुष्कर्म की घटनाओं को अंजाम दिया जाता है, हर सप्ताह में 5 दलितों के घर जलाये जाते हैं, 6 का अपहरण होता हैं, 11 दलितों की पिटाई की जाती हैं, हर सप्ताह में 13 दलितों की हत्याएँ की जाती हैं। कुल मिलाकर हर 18वें मिनट में दलितों को शोषित और प्रताडित किया जाता हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि "अधिकारों की रक्षा कानून के द्वारा नहीं बल्कि समाज की सामाजिक और नैतिक चेतना द्वारा की जाती है। अगर सामाजिक चेतना ऐसी है कि वह अधिकारों को मान्यता देने के लिए तैयार है जिन्हें अध्यादेशों को कानून लागू करता है तो अधिकार सुरक्षित रहेंगे। यदि वर्ग और समुदाय द्वारा प्रबल विरोध किया जाता है तो कोई भी कानून, कोई संसद, कोई न्यायपालिका उनकी गारंटी नहीं देती।" दलित समाज में परिवर्तन होने लगा है, क्योंकि समय परिवर्तनशील है और हिन्दू समाज में सदियों से व्यापत छुआछूत की बेड़ियाँ भी टूटने लगी हैं। भारतीय दलित समस्याओं और दलित चेतना में अम्बेडकर के सिद्धांत और विचारों को आत्मसात करने में कामयाब नजर आ रहे हैं। डॉ. अम्बेडकर का मूल मंत्र "शिक्षित बनो, संघर्ष करो और संगठित रहों' दलित चेतना में चिंगारी का काम कर रहा है और यह सर्वविदित है कि वर्तमान में कुछ दलित उच्च स्थानों पर विराजमान हैं, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि भारत के सबसे बडे सूबे उत्तर प्रदेश का दलित महिला के रुप में मुख्यमंत्री बनना। स्वतंत्रता और तानाशाही के बीच हिटलर जैसा वैर होता हैं। मैजिनी के शब्दों में "आप व्यक्ति की हत्या तो कर सकते हो लेकिन उसके विचारों की नहीं कर सकते, पेड को जल की आवश्यकता होती है और विचार को प्रसार की जरूरत होती है अन्यथा दोनो मुरझा जायेगें।" ज्योतिबा फूले, स्वामी दयानन्द सरस्ती, स्वामी विवेकानन्द, राजाराम मोहन राय, एनी बेसेन्ट, रानाडे, छत्रापति शाहू जी महाराज, नारायण गुरू, पेरियार, अछूतानन्द, बिरसामुंडा, गांध्ी, नेहरू, बी.पी. मौर्य, कांशीराम और मायावती के विचार और समतामूलक सिद्वान्त दलित चेतना में प्रकाशमान दृष्टिगोचर हो रहे है और यहीं कारण है कि उत्तर प्रदेश के दलित आई. ए.एस., पी.सी.एस, वकील, इजीनियर, सांसद जैसे उच्च पदों पर आसीन है लेकिन न्यायपालिका और कार्यपालिका में दलितों का स्थान नगण्य सा ही रहा हैं। वर्तमान में दलितों को आश्यकता है डॉ. अम्बेडकर जैसे कानूनविद बनाने की। गुरुनानक, कबीरदास, रविदास, तुकाराम, नामदेव, तुलसीदास, बल्लभाचार्य, चोखमेला, बालीनाथ और माध्वाचार्य आदि भक्तिकाल के समाज सुधरकों और सन्तों ने छुआछूत, कर्मकांडों, मूर्तिपूजा, कुप्रथाओं का खंडन करके समाज के सभी मनुष्यों को समानता का उपदेश देकर दलित समाज में शोषण के विरुद्ध चेतना जागृत करने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक भारत के दलितों के उत्थान में भारतीय समाज सुधरकों ने पूरा जीवन सामाजिक क्रिया कलापों में समर्पित कर दिया। ज्योतिबा फुले, रामास्वामी नायकर, नारायण गुरू पेरियार, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, स्वामी अछूतानन्द, बिरसा मुंडा, बी.पी. मौर्य,

कांशीराम आदि समाज सुधरकों ने सामाजिक आन्दोलनों के द्वारा जाति विभाजन की ;रैड़क्लिफ रेखा को अस्वीकार कर दिया और अस्पृश्यता, मूर्तिपूजा, पशुबलि का प्रबल विरोध करके मनुष्यों के बीच भाईचारे के पुल बाँधने के प्रयास किये। दलितों, पिछडों के लिए स्कूल खुलवाये और छुआछूत, अंधविश्वासों, रूढिवादी नीतियों की कड़ी निन्दा की। डॉ. अम्बेडकर ने इंडियन लेबर पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया और आल इंडिया शेड्यूल कास्ट फेडरेशन का निर्माण करके सवर्णो के द्वारा दलितों के साथ किये जाने वाले अत्याचारों के विरुद्ध आन्दोलन चलाकर बुद्धिजीवियों और अंग्रेजों को भी दलित समस्या की ओर आकर्षित कर लिया और यही कारण था कि अंग्रेजी सरकार के द्वारा दलित पृथक निर्वाचन की माँग स्वीकार की गई।

डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि राजनैतिक सत्ता ही वह चाबी है जिससे विकास के सारे बन्द दरवाजे खुलते हैं। जब हम आधुनिक इतिहास पर नजर डालते हैं तो ये पाते हैं कि कुछ बुद्धिजीवी दलित कुछ शीर्ष स्थानों पर बैठे हैं। मगर सच यही हैं कि ये लोग भी अपने समाज को ऊपर उठाने में पूर्ण रूप से सक्षम नजर नहीं आ रहे हैं। शिक्षित बनो, संघर्ष करो और संगठित रहो का संदेश पूर्ण रूप से सफल नजर नहीं आ रहा है क्योंकि भारतीय दलित बड़े पैमाने पर अपने संघर्ष में आज भी असपफल हैं। गांधीजी को स्वदेशी समाज की नैतिकता से आशा थी कि उसका समाज समानता की विचारधारा पर आधरित एक धर्मनिरपेक्ष समाज होगा। बाबा साहेब अम्बेडकर ने दलितों की समस्याओं को जनमानस के पटल पर लाकर खड़ा किया और अपनी तर्कशील बुद्धिमत्ता से बुद्धिजीवियों, समाज सुधरकों और लेखकों को कसौटी पर तौलने और परखने के लिए विवश कर दिया। लोहिया को स्वाधीनता में निहित क्रांतिकरण की प्रकिया पर विश्वास था और नेहरू को नवराष्ट्र निर्माण में आशा की किरण नजर आ रही थी। दलितों को भारतीय हिन्दू समाज में अपना स्थान पाने के लिए बुद्वि, विश्वास, शिक्षा, मेहनत, लगन, एकता के मूलमंत्र को अपनाना ही होगा। इतिहास के पन्नों पर समाज सुधरकों के वो सामाजिक आंदोलन आज भी हाशिये पर हैं, जिन्होने दलित चेतना और दलित उत्थान में विशेष भूमिका निभाई। डॉ अंबेडकर ने कहा था कि "राष्ट्र की गुलामी से अस्पृश्य समाज की गुलामी की हालत ज्यादा दर्दनाक हैं। इसे समाप्त करने के लिए अस्पृश्यता समाप्त करनी पडेगी, अन्यथा धर्मान्तरण का रास्ता अपनाना पडेगा।" धर्म परिवर्तन करने वालों की कोई जाति नहीं होती है फिर भी वे शादी विवाह अपने वालों में ही करते हैं। इस कारण दलित एकीकरण नहीं हो पा रहा है। हिन्दू समाज और दलित समाज में व्यापत विषमताओं और कुसंगतियों की बेडियो को मिटाने के लिए और बिखरी हुई उपजातियों को संजोकर दलित समाज का एकीकरण करने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में कई लाख लोगों के साथ बौद्व धर्म ग्रहण किया था। लेकिन यह सत्य है कि धर्मान्तरण और अंतर्जातीय विवाह का मार्ग भी दलित समाज को सामाजिक समानता दिलाने में नाकामयाब ही रहा है। संविधान के अनुच्छेद-17 के द्वारा अस्पृश्यता समाप्त कर दी गई हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में भी कुछ बदलाव जरुर आया है। खाने पीने की छुआछूत सवर्ण ही नहीं करते हैं, दलितों में भी हैं। चर्मकार, सफाईकर्मी के साथ और कोरी-चर्मकार के साथ बैठकर खाना नहीं खाता है। जातिभेद और वर्णभेद को मिटाना

आसान नहीं है, लेकिन परिवर्तन जरुर आ रहा है। जातिभेद की विकराल समस्या को समाप्त करने के लिए सामाजिक क्रांति की आवश्यकता महसूस हो रही है। इसमें कोई संदेह नही है कि असमानता हर समाज और युग में किसी न किसी रुप में विद्यमान रही है। यह सर्वविदित है कि आधुनिक दलितों की सामाजिक, आर्थिक, धर्मिक, राजनैतिक स्तर और दलित चेतना में निरन्तर परिवर्तन हो रहा हैं। संवैधनिक अधिकार लागू होने के पश्चात् भी राष्ट्र में अनेक उतार चढ़ाव आये हैं और अछूतपन की समस्या के निराकरण के लिए तरह- तरह के प्रयास किये जा रहे हैं। जिससे दलित समाज राष्ट्र के मानव कल्याण के कार्यो में और देश को विकसित देशों की कतार में खड़ा करने में पूर्ण रूप से योगदान दे सके। सामाजिक और राजनीतिक रूप से स्वाधीन भारत में जयप्रकाश नारायण के नेतृव में चलाये गये जन आन्दोलन संपूर्ण क्रांतिद्ध और लोहिया के पिछडे पावैं सौ में साठ के साथ समग्रता से कांशीराम ने दलितों को आत्मसम्मान दिलाने, समतामूलक समाज बनाने, जाति उन्मूलक समाज बनाने, विभाजित समाज को जोडने, बामसेफ, दलित शोषित संघर्ष समिति और बहुजन समाज पार्टी की स्थापना करके दलितों की सामाजिक, आर्थिक, धर्मिक और राजनीतिक दशा में सुधरों को नई दिशा दी। उत्तर प्रदेश की राजधनी में पेरियार मेला लगाकर दलितों में अपने अधिकारों के प्रति सामाजिक, धर्मिक, राजनैतिक चेतना का संचार किया। कांशीराम ने दलित समाज में चेतना लाने के लिए आह्वान किया 'जाति तोड़ो', 'समाज जोड़ो,' 'जातियों की चीनी दीवार नष्ट करो' और 'भाईचारे के पुल बनाओं'। सन् 1960 से 1970 के मध्य उत्तर प्रदेश में रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया के नेता बी.पी.मौर्य ने सामाजिक आन्दोलन चलाकर दलित चेतना को मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाई और हिंदू धर्म में वर्णित कुप्रथाओं का विरोध किया। उन्होंने एक नारा दिया "जाटव मुस्लिम भाई भाई, हिंदू कौम कहाँ से आई।" दलित सेना, भीम सेना और दलित पैंथर आदि सामाजिक आंदोलनों के अथक प्रयासों से दलित चेतना का उद्भव हो रहा है। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन मायावती ने दलित समाज की सामाजिक, आर्थिक, धर्मिक, राजनीतिक और बौद्धिक स्तर पर चेतना लाने हेतु पूरे उत्तर प्रदेश में बाबा साहेब की लगभग 15,000 मूर्तियाँ लगवाई। उत्तर प्रदेश के 1,12, 804 गाँवों में से 11,524 गाँवों को अम्बेडकर ग्राम विकास योजना में सम्मिलित किया गया और हर गाँव में बाबा साहेब की मूर्तियाँ लगवाई। आगरा विश्वविद्यालय का नाम बदलकर डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय रखा। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, अम्बेडकर नगर, ज्योतिबा फूले नगर, गौतम बुद्ध नगर, छत्रपति शाहू जी नगर, नोएडा और लखनऊ में दलित प्रेरणा स्थल पार्क बनवाये और दलित समाज सुधारकों के नाम से सरकारी योजनायें भी कार्यान्वित की।

शोध पत्र का महत्त्व और उपयोगिता

प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन भारत में दलित चेतना में आये बदलावों और उनकी भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए ऐतिहासिक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इन सभी प्रश्नों का उत्तर सरकारी दस्तावेजों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और ऐतिहासिक पुस्तकों का गहन अध्ययन करके शोध में समाहित किया गया है। ।

उपसंहार

उपर्युक्त विवेचन के आधर पर यह विदित होता है कि दलित चेतना में डॉ. अम्बेडकर के विचार

और सिद्धांत अधिक प्रासंगिक नजर आते है। भारतीय दलितों की हिन्दू समाज में उनकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, धर्मिक स्थिति और सांस्कृतिक दशा में सुधार अवश्य दृष्टिगोचर होता है। डॉ. अम्बेडकर जैसे महान कानूनविद के नेतृत्व का अभाव दिखाई पडता है। भारतीय दलित अपने खोये हुए इतिहास को जनमानस पर रखकर डॉ. अम्बेडकर के सपने को पूरा करने का प्रबल प्रयास कर रहे हैं, लेकिन इस लोकतान्त्रिक देश में दलित हिन्दू समाज में सामाजिक समानता प्राप्त नहीं कर पाये हैं जो भारतीय लोकतंत्र के लिए बड़े शर्म की बात हैं। डॉ. अम्बेडकर के विचारों और सिद्धांतों को सम्पूर्ण भारत के दलितों को आत्मसात करने की आवश्यकता है। क्योंकि डॉ. अम्बेडर ने कहा था कि मैं अपने समाज के लोगों को इस देश पर शासन करते हुए देखना चाहता हूँ।

सन्दर्भ

1 पासवान, चंद्रशेखर, बौद्ध धर्म और आधुनिक भारत में दलित चेतना, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1991
2 दुबे, अभय कुमार, आधुनिकता के आईने में दलित आन्दोलन, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2008.
3 देसाई, ए.आर., भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, नई दिल्ली, मैकमिलन प्रकाशन, 1988
4 कीर, ध्नंजय, डॉ. अंबेडकर का जीवन और उद्देश्य, प्रथम संस्करण, दिल्ली, पोपुलर प्रकाशन, 1990
5 नैमिशराय, मोहनदास, डॉ. अम्बेडकर और मार्टिन लूथर किंग का जीवन संघर्ष, नई दिल्ली, नीलकंठ प्रकाशन, 2000
6 चंचरीक, कन्हैयालाल, आधुनिक भारत का दलित आंदोलन, नई दिल्ली, दया पब्लिशर, 2006
7 तेलतुमड़े आनन्द, सत्ता, समाज और दलित, दिल्ली, एम एस पब्लिशर्स, 2011
8 संघरक्षित, अंबेडकर और बुद्धिज़्म, प्रथम संस्करण, दिल्ली, मोती लाल बनारसी दास, 2006
9 झा, डी. एन. और श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1992
10 थापर, रोमिला, प्राचीन भारत का इतिहास, पटना, राजकमल प्रकाशन, 1993
11 शर्मा, आर. एस. शूद्रों का प्राचीन इतिहास, पटना, राजकमल प्रकाशन, 1992
12 श्रीनिवास, एम. एन., आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, पटना, राजकमल प्रकाशन, 1991
13 लिमये, मधु, डॉ अंबेडकर एक चिंतन, दिल्ली, एस वी आई प्रकाशन, 1989
14 एस. एम. माइकल, आधुनिक भारत में दलित, दृष्टि और मूल्य, नई दिल्ली, सेज प्रकाशन, 1999
15 गुप्ता, रमणिका, दलित चेतना सोच, बिहार, नवलेखन प्रकाशन, 1998
16 हबीब, इरपफान, भारतीय इतिहास में मध्यकाल, नई दिल्ली, ज्ञान पब्लिशर, 2011
17 राम, जगजीवन, भारत में जातिवाद एवं हरिजन समस्या, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स, 2001
18 नैमिशराय, मोहनदास, बहुजन समाज, नई दिल्ली, नीलकंठ प्रकाशक, 2003
19 पूरणमल, अस्पृश्यता और दलित चेतना, जयपुरः पोइंटर प्रकाशक, 1999
20 रत्नू, डॉ. कृष्ण कुमार, समकालीन भारतीय दलित समाज, बदलता स्वरुप और संघर्ष, जयपुर, बुक इंकलेव प्रकाशक, 2003
21 रत्नू, नानकचन्द, डॉ. अम्बेडकर के जीवन के कुछ अंतिम वर्ष, दिल्ली, किताब घर प्रकाशन, 2003
22 अम्बेडकर, डॉ. भीमराव, बाबा साहेब अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड़मय खंड-1से 21, नई दिल्ली, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान भारत सरकार
23 दुबे, अभय कुमार, आज के नेता कांशीराम, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1997
24 प्रसाद, ओमप्रकाश और गौरव प्रशान्त, प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास ई. पू. 1500-500 ई. पू.द्ध, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2008
25 पांडेय, श्रीध्र, आध्ुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, दिल्लीः मोतीलाल बनारसी दास,

26 पांडेय, ध्नपति और अनंत, अशोक, प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास,

27 Aherwar, S.P., *Caste based discrimination and Durban Conference*, New Delhi: Samyak Prakashan, , 2001

28 Ambedkar, Dr. B.R., *Caste in India: Their Mechanism Genesis and Development*, Mumbai: Bhim Patrika Pulication, 1977

29 Ambedkar, B.R., *What Congress and Gandhi have done to the Untouchables*, Volume-9, Mumbai: Government of Maharashtra, 1991

30 Ambekar, B.R., *Emancipation of the Untouchables*, Mumbai: Thakar Publication, 1943

31 Ambedkar, B.R. *The Untouchables*, Volume-7 Mumbai: Government of Maharashtra, 1990

32 Aston, Nathan M., *Dalit literature and Afro-American literature*, New Delhi: Prestige Books, 2001

33 Akinchan, S., *Caste, Class and Politics*, New Delhi: Gyan Publishing, 1995

34 Abedi, Zakir, *Dalit Social Empowerment in India*, New Delhi: Arise Publication, 2010